साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 26 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 24 जून 2026 से 30 जून 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

जलवायु परिवर्तन से बदल रही है चट्टानों के टूटने की प्रक्रिया– अध्ययन में बड़ा खुलासा

स्पेन जलवायु परिवर्तन से फ्रॉस्ट वेदरिंग बदल रही, गर्म जलवायु के कारण यह प्रक्रिया अब नीचे के इलाकों से हटकर ऊपर की ओर यानी ऊंचे पहाड़ों की तरफ बढ़ रही है पहाड़ी क्षेत्रों में फ्रॉस्ट वेदरिंग अभी भी सक्रिय है और कुछ स्थानों पर यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत स्थिर या बढ़ी हुई दिखी है।

जलवायु परिवर्तन से स्पेन में फ्रॉस्ट वेदरिंग घट रही है, चट्टानों के टूटने की प्रक्रिया पिछले तीन दशकों में कमजोर हुई है। निचले क्षेत्र और तटीय इलाके लगभग फ्रॉस्ट गतिविधि से मुक्त हो रहे हैं, क्योंकि ठंड के दिन और फ्रीज-थॉ चक्र घटे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में फ्रॉस्ट वेदरिंग अभी भी सक्रिय है और कुछ स्थानों पर यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत स्थिर या बढ़ी हुई दिखी है। वैज्ञानिकों के अनुसार ठंड से जुड़ी चट्टान टूटने की प्रक्रिया अब नीचे से ऊपर ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों की ओर खिसक रही है। भविष्य में 2050 तक फ्रॉस्ट वेदरिंग मुख्यत: ऊंचे पर्वतों तक सीमित रह सकती है, जबकि अन्य क्षेत्र लगभग पूरी तरह मुक्त होंगे। जलवायु परिवर्तन का असर केवल मौसम या तापमान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह धरती की सतह को बदलने वाली प्राकृतिक प्रक्रियाओं को भी प्रभावित कर रहा है। हाल ही में सामने आए एक नए अध्ययन में यह पाया गया है कि स्पेन में चट्टानों के टूटने की एक बड़ी प्रक्रिया, जिसे फ्रॉस्ट वेदरिंग कहा जाता है, पिछले तीन दशकों में बदल गई है। यह प्रक्रिया तब होती है जब पानी चट्टानों की दरारों में घुसकर जम जाता है और फैलने के कारण चट्टानें टूटने लगती हैं। इस अध्ययन से पता चलता है कि गर्म होते जलवायु के कारण यह प्रक्रिया अब पहले जैसी नहीं रही है। यह शोध स्पेन के विभिन्न इलाकों में किया गया, जिसमें पहाड़ी क्षेत्र, तटीय क्षेत्र, आंतरिक मैदानी इलाके और कुछ ठंडे पर्वतीय क्षेत्र शामिल थे। वैज्ञानिकों ने 1993 से 2022 तक के मौसम के आंकड़ों का अध्ययन किया। इसमें 84 मौसम केंद्रों से मिले तापमान और बारिश के रोजमर्रा के रिकॉर्ड शामिल थे। शोधकर्ताओं ने यह समझने की कोशिश की कि कितने दिनों तक तापमान शून्य डिग्री से नीचे जाता है, कितनी बार दिन और रात में तापमान जमने और पिघलने की स्थिति बनती है और यह प्रक्रिया कितनी तीव्र होती है। दि क्रायोस्फीयर में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि स्पेन के अधिकतर हिस्सों में ठंड के दिन कम हो गए हैं। बर्फ जमने और पिघलने की घटनाएं भी पहले की तुलना में घट गई हैं। इसका मतलब है कि सामान्य रूप से चट्टानों के टूटने की प्रक्रिया कमजोर हो रही है। खासकर निचले इलाकों, समुद्री तटों और दक्षिणी क्षेत्रों में अब बहुत कम या लगभग नगण्य फ्रॉस्ट गतिविधि बची है। साथ ही ठंड का मौसम भी छोटा हो गया है, जिससे चट्टानों पर इसका असर कम समय के लिए ही रह गया है। हालांकि पूरे देश में यह गिरावट देखी गई है, लेकिन ऊंचे पहाड़ी इलाकों में स्थिति अलग है। स्पेन के कुछ पर्वतीय और उनके आसपास के क्षेत्रों में अभी भी ऐसे तापमान मिलते हैं जो चट्टानों को तोड़ने की प्रक्रिया के लिए सबसे अनुकूल हैं। कई जगहों पर यह भी देखा गया कि यह प्रक्रिया पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, बल्कि कुछ ऊंचाई वाले हिस्सों में यह स्थिर बनी हुई है या स्थानीय रूप से बढ़ भी रही है।

भविष्य में क्या हो सकता है

शोध में अनुमान लगाया गया है कि साल 2050 तक यह प्रक्रिया और भी अधिक सीमित हो जाएगी। यानी फ्रॉस्ट वेदरिंग मुख्य रूप से केवल बहुत ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों तक ही रह जाएगी। स्पेन के अधिकतर निचले और तटीय क्षेत्र लगभग पूरी तरह इससे मुक्त हो सकते हैं। विशेष रूप से स्पेन के सबसे ऊँचे पर्वत क्षेत्र जैसे पाइरेनीज में यह प्रक्रिया सबसे अधिक सक्रिय रह सकती है।

असर और चुनौतियां

इस बदलाव का असर केवल प्राकृतिक भू-आकृति तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे मानव जीवन भी प्रभावित हो सकता है। चट्टानों के टूटने से पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन और पत्थर गिरने की घटनाएं होती हैं, जो सड़कों, रेल मार्गों और सुरंगों के लिए खतरा पैदा करती हैं। यदि यह प्रक्रिया ऊंचाई वाले इलाकों में अधिक केंद्रित हो जाती है, तो उन क्षेत्रों में खतरा बढ़ सकता है जहां पहले इतनी तीव्र गतिविधि नहीं थी। इसके अलावा यह बदलाव पुरानी इमारतों और ऐतिहासिक धरोहरों पर भी असर डाल सकता है, क्योंकि पत्थर से बनी संरचनाएं भी इसी तरह की मौसमीय प्रक्रियाओं से धीरे-धीरे कमजोर होती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण इन प्रक्रियाओं का स्थान बदलना भविष्य में नई चुनौतियां पैदा कर सकता है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक प्रक्रियाओं को समाप्त नहीं कर रहा, बल्कि उन्हें नए तरीके से और नई जगहों पर व्यवस्थित कर रहा है। स्पेन में फ्रॉस्ट वेदरिंग का घटता और ऊंचाई की ओर बढ़ता पैटर्न इस बात का संकेत है कि धरती की भू-आकृति बदलने वाली शक्तियां भी अब बदलते जलवायु के साथ खुद को ढाल रही हैं।

विश्व वर्षावन दिवस- प्रकृति संरक्षण, परंपरा और जैव विविधता का संगम हैं भारत के जंगल

नई दिल्ली भारत के वर्षावन घने जंगलों, समृद्ध जैव विविधता, आदिवासी जीवन, महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान और सतत पर्यावरण संरक्षण की महत्वपूर्ण कहानी और महत्व भारत के वर्षावनों में असम, मेघालय, अरुणाचल, पश्चिमी घाट और अंडमान-निकोबार की समृद्ध प्राकृतिक धरोहर शामिल है

विश्व वर्षावन दिवस पर भारत के घने जंगलों की जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया भारत के वर्षावनों में असम, मेघालय, अरुणाचल, पश्चिमी घाट और अंडमान-निकोबार की समृद्ध प्राकृतिक धरोहर शामिल है आदिवासी महिलाएं वर्षों से जंगलों से भोजन, औषधीय पौधे और संसाधन एकत्र कर पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित कर रही हैं

पश्चिमी घाट और पूर्वोत्तर भारत के वर्षावन दुर्लभ वन्यजीवों और अनोखे पौधों की प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण आवास हैं

सतत जीवनशैली और पारंपरिक ज्ञान के आधार पर भारत के वर्षावनों का संरक्षण स्थानीय समुदायों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है हर साल 22 जून को मनाया जाने वाला विश्व वर्षावन दिवस हमें पृथ्वी के सबसे समृद्ध और जैव विविधता से भरपूर पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा की याद दिलाता है। वर्षावन केवल पेड़ों का समूह नहीं होते, बल्कि वे अनगिनत जीव-जंतुओं, पौधों और मानव समुदायों के जीवन का आधार होते हैं। भारत भी ऐसे कई महत्वपूर्ण वर्षावनों का घर है, जो देश की प्राकृतिक धरोहर का अहम हिस्सा हैं। भारत के वर्षावन अलग-अलग क्षेत्रों में फैले हुए हैं। पूर्वोत्तर भारत, पश्चिमी घाट और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह इनमें प्रमुख हैं। इन क्षेत्रों के घने जंगलों में भारी नमी, घनी हरियाली और असाधारण जैव विविधता पाई जाती है। यहां कई ऐसे पौधे और जीव पाए जाते हैं जो दुनिया में कहीं और नहीं मिलते। इन जंगलों का महत्व केवल प्रकृति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थानीय लोगों के जीवन, संस्कृति और आजीविका से भी गहराई से जुड़े हुए हैं।

भारत के कई जंगलों में रहने वाली महिलाएं जंगल को अपने घर के विस्तार के रूप में देखती हैं। पश्चिमी घाट के आदिवासी और किसान समुदायों की महिलाएं वर्षों से जंगल से भोजन, औषधीय पौधे, फल, मसाले और रेशेदार सामग्री एकत्र करती रही हैं।

पूर्वोत्तर भारत में आदिवासी महिलाएं जैव विविधता से भरपूर रसोई बागानों (किचन गार्डन) का प्रबंधन करती हैं और स्थानीय फसलों को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भी महिलाएं और समुदाय जंगल आधारित जीवनशैली को टिकाऊ तरीके से अपनाते हैं।

इन महिलाओं के पास मौसम, पौधों के चक्र, वर्षा के बाद उगने वाली औषधीय जड़ी-बूटियों और खाद्य संसाधनों के बारे में गहरी जानकारी होती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ती रही है। आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की बात कर रही है, तब यह समझना जरूरी है कि जंगलों के साथ रहने वाले समुदाय, विशेषकर महिलाएं, सदियों से यह काम कर रही हैं। वे केवल जरूरत के अनुसार ही वन संसाधनों का उपयोग करती हैं। वे यह भी सुनिश्चित करती हैं कि बीज और पौधों की पुनरुत्पत्ति के लिए पर्याप्त संसाधन जंगल में छोड़े जाएं। यह जीवनशैली प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की एक महत्वपूर्ण मिसाल है। असम के वर्षावन भारत के सबसे समृद्ध जैव विविधता वाले क्षेत्रों में गिने जाते हैं। यहां की नदियां और अधिक बारिश इन जंगलों को और भी घना बनाती हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान अपनी एक सींग वाले गैंडे के लिए प्रसिद्ध है, जबकि मानस राष्ट्रीय उद्यान दुर्लभ जीवों जैसे पिग्मी हॉग और गोल्डन लंगूर का घर है। मेघालय, जिसका अर्थ ही बादलों का घर है, अत्यधिक बारिश के लिए जाना जाता है। यहां चेरापूंजी और मावसिनराम जैसे क्षेत्र घने सदाबहार जंगलों से ढके हैं। यहां ऑर्किड, फर्न और औषधीय पौधों की भरमार है। जीवित जड़ पुल (लिविंग रूट ब्रिज) इस क्षेत्र की अनोखी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विशेषता हैं। अरुणाचल प्रदेश भारत के सबसे कम खोजे गए राज्यों में से एक है, जहां विशाल और घने वर्षावन पाए जाते हैं। यहां रेड पांडा, हिम तेंदुआ और हॉर्नबिल जैसे दुर्लभ जीव मिलते हैं। नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान इस राज्य की प्राकृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में फैले पश्चिमी घाट भारत का एक प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र है। कुद्रेमुख और नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान कर्नाटक के महत्वपूर्ण वन क्षेत्र हैं। केरल का साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान और पेरियार वन्यजीव अभयारण्य अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं। तमिलनाडु के अनामलाई टाइगर रिजर्व और नीलगिरी बायोस्फीयर रिजर्व भी इस क्षेत्र की पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत के सबसे प्राकृतिक और कम प्रभावित वर्षावनों में से एक हैं। यहां अंडमान जंगली सूअर और निकोबार कबूतर जैसे दुर्लभ जीव पाए जाते हैं।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना: 191 यात्री रवाना

इंदौर। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत से यात्राएं शुरू हुई है। पहली यात्रा में हरिद्वार से ऋषिकेश के लिए 191 महिला-पुरुष रवाना हुआ। यात्री 23 जून को वापसी करेंगे। यात्रियों को लेकर निकलने वाली ट्रेन को विधायक रमेश मैंदोला और मेयर इन कौंसिल सदस्य नंदकिशोर पहाड़िया ने हरीझंडी दिखाई।

यात्रा को लेकर महिला-पुरुषों के साथ एक-एक अटेंडर भी गए हैं, ताकि वे अपने सहयोगी की रास्ते में मदद कर सके। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने कार्यकाल में यह योजना शुरू की थी। इस दौरान इंदौर और उसके आसपास के हजारों लोगों ने यात्रा का लाभ लिया था। उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद मुख्यमंत्री मोहन यादव ने इस योजना को दोबारा शुरू किया है। डेढ़ साल से योजना शुरू करने को लेकर कवायदे चल रही थी जिसे अब जाकर मूर्त रूप दिया गया है। योजना में शामिल होने के लिए झोन स्तर और जिला पंचायत द्वारा आवेदन लिए जा रहे थे। 16 जून तक आवेदन लेने के बाद आज से यात्रा शुरू की गई। यात्रा में शामिल यात्रियों के खाने पीने और रहने व्यवस्था शासन स्तर पर की जाएगी। यात्रा में 65 वर्ष और उससे अधिक के महिला पुरुषों को शामिल किया गया है। सब यात्रियों के साथ एक-एक सहयोगी को भी रवाना किया है। यत्रा रवाना होने के पहले सभी यात्रियों का स्वास्थ्य परिक्षण किया गया है ताकि यात्रा के दौरान वे बीमार नहीं हो सकें।

प्रकृति हमारी मां है, इसे रासायनिक उर्वरकों से बचाएं, प्राकृतिक खेती अपनाएं - प्रधानमंत्री श्री मोदी

भोपाल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि प्रकृति हमारी माता है और हम सब इसकी संतान। अपनी धरती माता को हमें रासायनिक उर्वरकों और हानिकारक कीटनाशकों से बचाना है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती का पहला लक्ष्य मिट्टी में जैविक गतिविधियों को बढ़ाना है। यह खेती मिट्टी में केंचुए और सूक्ष्म जीव पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाती है। इससे भूमि की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है। स्वस्थ मिट्टी ही समृद्ध कृषि की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि किसान भाई अधिक से अधिक प्राकृतिक और जैविक खेती अपनाएं। इससे हमारी धरती माता की सेहत भी बनी रहेगी और इससे उपजे अनाज के पोषण से हम सब भी स्वस्थ रहेंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी शनिवार को पश्चिम बंगाल से पीएम किसान सम्मान निधि के अंतरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पश्चिम बंगाल के हुगली स्थित तारकेश्वर से देश के 9.40 करोड़ से अधिक किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि की 23वीं किश्त के रूप में कुल 18 हज़ार 880 करोड़ रुपए पात्र किसानों के खातों में अंतरित किए। कार्यक्रम से प्रदेश के 81 लाख से अधिक किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि के रूप में 1640 करोड़ रूपए प्राप्त हुए हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पीएम किसान सम्मान निधि के सभी लाभार्थियों से अपील करते हुए कहा कि हमें धरती माता को बचाना है। हमें अपने बच्चों को बंजर जमीन नहीं देनी है। भारत सरकार खेत बचाओ अभियान चला रही है। हमें प्राकृतिक खेती अपनाकर रासायनिक खाद और कीटनाशकों का उपयोग कम से कम करना है। देशभर के किसान खेत बचाओ अभियान से जुड़ें, दूसरों को भी प्रेरित करें और खेतों की मिट्टी की जांच करवाएं। हम सभी मिलकर धरती मां की रक्षा करें। हम केमिकल से धरती मां को नहीं मार सकते हैं। हमें उसे बचाना ही होगा। केंद्र सरकार ने विकसित भारत ञ2047 का संकल्प लिया है, इसमें देशवासियों का सहयोग बेहद जरूरी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के किसानों से कहा कि जिस तरह प्राकृतिक खेती से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, उसी तरह योग करने से हमारा तन-मन स्वस्थ रहता है। प्रधानमंत्री ने सभी को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) की अग्रिम बधाई देते हुए कहा कि सभी देशवासी योग करें, क्योंकि योग ही स्वस्थ जीवन की कुंजी है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की शुरूआत फरवरी 2019 में हुई थी। इसके तहत हर साल छह हजार रूपये, दो-दो हजार की तीन समान किश्तों में किसान भाईयों को दिए जाते हैं। अब तक प्रदेश के किसान भाईयों को 22 किश्तों में 33 हजार 800 करोड़ रूपये मिल चुके हैं। शनिवार को 23वीं किश्त का अंतरण किया गया। पश्चिम बंगाल में हुए इस कार्यक्रम का देशभर में सीधा प्रसारण किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को बरखेड़ीकला स्थित राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान (सिपेट) में %प्राकृतिक खेती कार्यशाला सह कृषक संगोष्ठी% में पहुंचकर प्रधानमंत्री श्री मोदी के संपूर्ण संबोधन का श्रवण किया। मुख्यमंत्री ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हम रामराज्य की संकल्पना को साकार होते देख रहे हैं। प्रधानमंत्री ने गांव, गरीब, अन्नदाता किसान, युवा और नारी सहित सभी वर्गों के कल्याण से विश्व में भारत की अलग ही पहचान बनाई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मध्यप्रदेश को दो-दो नदी जोड़ो परियोजनाओं की सौगात दी है। इससे प्रदेश के किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी मिलेगा और उनके सूखे खेतों में फसलें लहलहाएंगी। आज देश के हर गांव-कस्बे तक बिजली, पानी, सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं का जाल बिछ रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने ही देश के किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि देने की योजना प्रारंभ की है। यह हमारे अन्नदाता के अथक परिश्रम का सम्मान है। मध्यप्रदेश सरकार भी किसानों की आय बढ़ाने के लिए कृषक कल्याण वर्ष मना रही है। हम किसानों के कल्याण के लिए हर जरूरी कदम उठा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने पीएम किसान सम्मान निधि पाने वाले प्रदेश के सभी किसानों को बधाई दी और प्राकृतिक खेती अपनाने की अपील की। इस अवसर पर विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, जनप्रतिनिधि श्री रविन्द्र यति, अपर मुख्य सचिव एवं कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक बर्णवाल, आयुक्त श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, कलेक्टर भोपाल श्री प्रियंक मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में किसान बंधु उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि फसलों में कीटनाशक और रासायनिक खाद का उपयोग नुकसानदेह है। इससे कैंसर जैसी कई घातक बीमारियां जन्म लेती हैं। सरकार ने किसानों को पुनः प्राकृतिक खेती से जोड़ने के लिए पहल की है, इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। आज हमारा मध्यप्रदेश देश में सर्वाधिक प्राकृतिक खेती करने वाला राज्यों में अव्वल स्थान पर है। प्राकृतिक खेती की उपज को उचित दाम दिलवाने के लिए राज्य सरकार संकल्पित है। हमारी प्राकृतिक खेती से दुनिया लाभान्वित हों, इसी भाव से कार्य करते हुए प्रदेश में तेजी से गोशालाओं का विस्तार किया जा रहा है। हमारी गौमाता प्राकृतिक खेती में सबसे अधिक मददगार प्राणी है। किसान गोबर और गौमूत्र से खाद बनाकर खेतों में डालें, इसी उद्देश्य से गौपालक किसानों को हमारी सरकार हर महीने 1100 रुपए प्रति गाय की दर से आर्थिक सहायता दे रही है। गौ-आधारित कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करती है।

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश

देश में मछली पकड़ने (इनलैंड कैच) और एक्वाकल्चर में बढ़ोतरी से ग्लोबल मछली उत्पादन में एशिया का दबदबा दिखता है, जबकि एफएओ ने चेतावनी दी है कि समुद्री मछली के स्टॉक की सस्टेनेबिलिटी लगातार घट रही है भारत ने दुनिया के कुल जलीय जीवों का नौ प्रतिशत उत्पादन किया। इससे भारत अब चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश बन गया है। यह जानकारी फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (एफएओ) की स्टेट ऑफ वर्ल्ड फिशरीज एंड एक्वाकल्चर 2026 की रिपोर्ट में दी गई है। एफएओ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने अंतर्देशीय जल से मछली पकड़ने में भी दुनिया में अब बढ़त बनाई है। उसने नदियों, झीलों और मीठे पानी के स्त्रोतों से 2.2 मिलियन टन उत्पादन किया। यह बांग्लादेश के 1.4 मिलियन टन से अधिक है। चीन, इंडोनेशिया, वियतनाम और बांग्लादेश के साथ भारत उन पांच देशों के समूह का हिस्सा है जो सभी जलीय जीवों का 82 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। ये आंकड़े तब सामने आए हैं जब 2024 में वैश्विक मछली पालन और एक्वाकल्चर उत्पादन 235 मिलियन टन के साथ अपने नए उच्चतम स्तर पर पहुंचा। इसमें 195 मिलियन टन जलीय जीव और 40 मिलियन टन शैवाल शामिल थे। यह 2022 की तुलना में 5.2 प्रतिशत की वृद्धि को दिखता है। अकेले एक्वाकल्चर का उत्पादन रिकॉर्ड 142 मिलियन टन तक पहुंच गया है। शीर्ष पांच उत्पादक देशों (चीन, इंडोनेशिया, भारत, वियतनाम और बांग्लादेश) का इस उत्पादन में 84 प्रतिशत हिस्सा रहा है। जैविक रूप से पकड़ी जाने वाली समुद्री मछली की आबादी का हिस्सा 2021 में 64.5 प्रतिशत से घटकर 2023 में 62.4 प्रतिशत हो गया। एफएओ ने इस गिरावट का कारण आंशिक रूप से कार्यप्रणाली में बदलाव को बताया। पकड़ी गई मछलियों की मात्रा के आधार पर देखें तो एफएओ द्वारा निगरानी किए गए और आंके गए स्टॉक से पकड़ी गई मछलियों में से 72.6 प्रतिशत हिस्सा प्रबंधित स्टॉक से आया था।

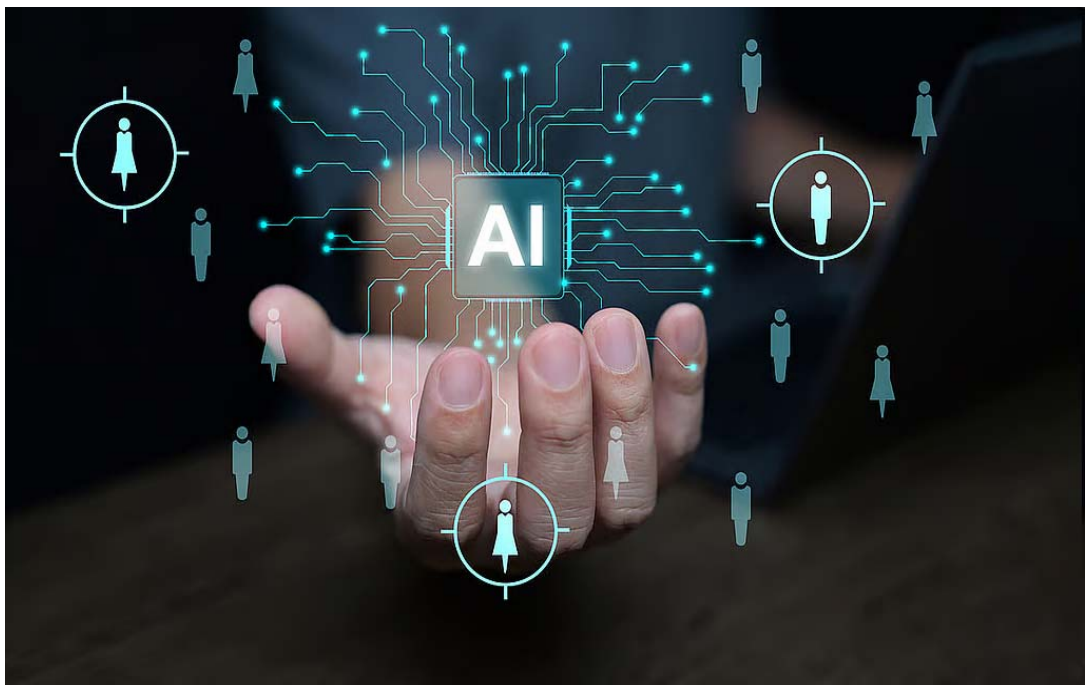

लैंगिक पूर्वाग्रह और ऑनलाइन दुर्व्यवहार को बढ़ावा दे रहा है एआई

न्यूयार्क। यूएन वुमेन ने चेतावनी दी है कि एआई प्रणालियां लैंगिक रूढ़ियों और नस्लीय पूर्वाग्रह को मजबूत कर रही हैं। 133 एआई प्रणालियों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि 44 प्रतिशत में लैंगिक पूर्वाग्रह था, जबकि 26 प्रतिशत में लैंगिक और नस्लीय दोनों प्रकार के पूर्वाग्रह मौजूद थे।

एजेंसी का कहना है कि एआई महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ ऑनलाइन हिंसा को भी बढ़ा रहा है, जिसमें डीपफेक और छवि-आधारित दुर्व्यवहार शामिल हैं। यूएन वुमेन ने एआई के विकास, उपयोग और शासन के हर स्तर पर लैंगिक समानता को शामिल करने की अपील की है।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) वुमेन ने चेताया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पहले से ही अरबों लोगों के दुनिया को देखने के तरीके को प्रभावित कर रही है, लेकिन यह महिलाओं को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं कर रही है। जुलाई में जिनेवा में होने वाली संयुक्त राष्ट्र से जुड़ी दो प्रमुख एआई बैठकों से पहले एजेंसी ने कहा कि एआई प्रणालियों के डिजाइन, तैनाती और गनर्वेंस में लैंगिक समानता को शामिल किया जाना चाहिए। यूएन वुमेन ने 133 एआई प्रणालियों पर किए गए एक अध्ययन का हवाला दिया, जिसमें पाया गया कि 44 प्रतिशत प्रणालियों में लैंगिक पूर्वाग्रह था, जबकि 26 प्रतिशत में लैंगिक और नस्लीय दोनों प्रकार के पूर्वाग्रह पाए गए। एजेंसी ने कहा कि जोखिम बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि जनरेटिव एआई का उपयोग विपणन, संचार और मीडिया उत्पादन में व्यापक रूप से हो रहा है। एजेंसी के अनुसार, ब्रिटेन में 88 प्रतिशत विज्ञापन और मीडिया एजेंसियां किसी न किसी रूप में पहले से ही जनरेटिव एआई का उपयोग कर रही हैं। लेकिन वर्तमान में केवल 51 प्रतिशत विपणक एआई द्वारा तैयार रचनात्मक सामग्री को जारी करने से पहले उसकी जांच के लिए मानवीय निगरानी का उपयोग करते हैं।यूएन वुमेन ने कहा कि बड़े भाषा मॉडल (लार्ज लैंग्वेज मॉडल) महिलाओं को घर, परिवार और बच्चों जैसे शब्दों से जोड़ते पाए गए हैं, जबकि पुरुषों को व्यवसाय, कार्यकारी, वेतन और करियर जैसे शब्दों से जोड़ा जाता है। कुछ मामलों में, एआई द्वारा उत्पन्न प्रतिक्रियाओं में लैंगिक भेदभावपूर्ण और स्त्री-विरोधी दृष्टिकोण भी दिखाई दिए।एजेंसी ने यह भी चेतावनी दी कि एआई महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ ऑनलाइन हिंसा को और बढ़ा रहा है। इसके अनुसार, सर्वेक्षण में शामिल लगभग हर चार में से एक महिला मानवाधिकार रक्षक, कार्यकर्ता और पत्रकार ने एआई-सहायित ऑनलाइन हिंसा का अनुभव किया। कुछ ने निजी तस्वीरों को बिना सहमति साझा किए जाने, डीपफेक या छेड़छाड़ किए गए वीडियो तथा डिजिटल संदेशों के माध्यम से अवांछित यौन प्रस्तावों की शिकायत की।यूएन वुमेन के अनुसार, एआई प्रणालियों के विकास में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है और वे वैश्विक एआई कार्यबल का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा हैं। एजेंसी ने चेतावनी दी कि प्रतिनिधित्व की यह कमी दर्शाती है

जलवायु परिवर्तन से बदल रही है चट्टानों के टूटने की प्रक्रिया- अध्ययन में बड़ा खुलासा

जलवायु परिवर्तन का असर केवल मौसम या तापमान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह धरती की सतह को बदलने वाली प्राकृतिक प्रक्रियाओं को भी प्रभावित कर रहा है। हाल ही में सामने आए एक नए अध्ययन में यह पाया गया है कि स्पेन में चट्टानों के टूटने की एक बड़ी प्रक्रिया, जिसे फ्रॉस्ट वेदरिंग कहा जाता है, पिछले तीन दशकों में बदल गई है।

यह प्रक्रिया तब होती है जब पानी चट्टानों की दरारों में घुसकर जम जाता है और फैलने के कारण चट्टानें टूटने लगती हैं। इस अध्ययन से पता चलता है कि गर्म होते जलवायु के कारण यह प्रक्रिया अब पहले जैसी नहीं रही है। यह शोध स्पेन के विभिन्न इलाकों में किया गया, जिसमें पहाड़ी क्षेत्र, तटीय क्षेत्र, आंतरिक मैदानी इलाके और कुछ ठंडे पर्वतीय क्षेत्र शामिल थे। वैज्ञानिकों ने 1993 से 2022 तक के मौसम के आंकड़ों का अध्ययन किया। इसमें 84 मौसम केंद्रों से मिले तापमान और बारिश के रोजमर्रा के रिकॉर्ड शामिल थे। शोधकर्ताओं ने यह समझने की कोशिश की कि कितने दिनों तक तापमान शून्य डिग्री से नीचे जाता है, कितनी बार दिन और रात में तापमान जमने और पिघलने की स्थिति बनती है और यह प्रक्रिया कितनी तीव्र होती है। दि क्रायोस्फीयर में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि स्पेन के अधिकतर हिस्सों में ठंड के दिन कम हो गए हैं। बर्फ जमने और पिघलने की घटनाएं भी पहले की तुलना में घट गई हैं। इसका मतलब है कि सामान्य रूप से चट्टानों के टूटने की प्रक्रिया कमजोर हो रही है। खासकर निचले इलाकों, समुद्री तटों और दक्षिणी क्षेत्रों में अब बहुत कम या लगभग नगण्य फ्रॉस्ट गतिविधि बची है। साथ ही ठंड का मौसम भी छोटा हो गया है, जिससे चट्टानों पर इसका असर कम समय के लिए ही रह गया है। हालांकि पूरे देश में यह गिरावट देखी गई है, लेकिन ऊंचे पहाड़ी इलाकों में स्थिति अलग है। स्पेन के कुछ पर्वतीय और उनके आसपास के क्षेत्रों में अभी भी ऐसे तापमान मिलते हैं जो चट्टानों को तोड़ने की प्रक्रिया के लिए सबसे अनुकूल हैं। कई जगहों पर यह भी देखा गया कि यह प्रक्रिया पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, बल्कि कुछ ऊंचाई वाले हिस्सों में यह स्थिर बनी हुई है या स्थानीय रूप से बढ़ भी रही है। पहाड़ी क्षेत्रों में फ्रॉस्ट वेदरिंग अभी भी सक्रिय है और कुछ स्थानों पर यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत स्थिर या बढ़ी हुई दिखी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि गर्म जलवायु के कारण यह प्रक्रिया अब नीचे के इलाकों से हटकर ऊपर की ओर, यानी ऊंचे पहाड़ों की तरफ बढ़ रही है। इसका मतलब यह है कि फ्रॉस्ट वेदरिंग खत्म नहीं हो रही, बल्कि अपनी जगह बदल रही है। शोध में अनुमान लगाया गया है कि साल 2050 तक यह प्रक्रिया और भी अधिक सीमित हो जाएगी। यानी फ्रॉस्ट वेदरिंग मुख्य रूप से केवल बहुत ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों तक ही रह जाएगी। स्पेन के अधिकतर निचले और तटीय क्षेत्र लगभग पूरी तरह इससे मुक्त हो सकते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008